इस्लाम और आतंकवाद

एक निर्दोष जान की हत्या,
पुरी इंसानियत की हत्या है।

जिसने किसी एक जान को बचाया,
उसने पुरी इन्सानियत का जीवन बचाया।।

(कुरआन)

लेखक
मुस्तफ़ा रज़ा चाँगल
नागपूर

जरा सोंचे....

- जिस धर्म के नाम का अर्थ ही सलामती हो, क्या वह आतंकवादी धर्म हो सकता है?
- जो धर्म मुस्कुराकर बात करने को भी नेकी बताता हो, क्या वह आतंकवादी धर्म हो सकता है?
- वह धर्म जो कहता हो कि एक निर्दोष की हत्या सारे इन्सानियत की हत्या है, क्या वह आतंकवादी धर्म हो सकता है?
- जो धर्म किसी एक व्यक्ति की जान बचाने को सारी इन्सानियत की जान बचाना बताता हो, क्या वह आतंकवादी धर्म हो सकता है?
- जो धर्म हर इनसान बल्कि हर जानदार से भलाई करने को नेकी बताता है, क्या वह आतंकवादी धर्म हो सकता है?
- जिस धर्म ने इन्सान तो इन्सान एक चींटी को भी आग में जलाने से मना किया, क्या वह आतंकवादी धर्म हो सकता है?
- जो धर्म लड़ाई, युध्द की इच्छा से भी रोकता हो, क्या वह आतंकवादी धर्म हो सकता है?
- वह धर्म जिसने गैरमुस्लिम नाग[illegible] क़त्ल रखा हो, क्या वह आतंकवादी धर्म हो सकता है?
- जिस धर्म ने दुश्मन के इलाके में एक फलदार पेड़ भी काटने से मना किया, क्या वह आतंकवादी धर्म हो सकता है?
- जिस धर्म ने आज से १४०० साल पहले जब इन्सानी अधिकार के नाम से भी लोग अंजान थे उस दौर में युध्द की स्थिति मे घायल, अपंग, हथियार डालने वाले, कैदी, धर्मगुरु, बच्चे, औरते, बुढ़े, मजदूर, कारोबारी और आम जनता को मारने उनकी हत्या करने से मना किया। उस पर रोक लगाई, क्या वह आतंकवादी धर्म हो सकता है?

"अल्लाह"
के नाम से शुरू
जो अत्यंत महेरबान, रहम वाला

इस्लाम और आतंकवाद

-: लेखक :-
मुस्तफ़ा रज़ा चांगल
नागपूर

ग्लोबल इस्लामिक आर्गनाईज़ेशन
नागपूर

इस्लाम और आतंकवाद
लेखक : मुस्तफ़ा रज़ा चांगल
प्रूफ़ रीडिंग : सैय्यद मुजाहिद अली
बमौका : जश्ने ईद मिलादुन्नबी
कम्पोसिंग : नाज़िया परविन
प्रति : दो हज़ार (२०००)
सने इशाअत : रबीउलअव्वल १४३६ हिजरी
बमुताबिक डिसेम्बर २०१४ इसवी
प्रकाशक : ग्लोबल इसलामिक आर्गनाईज़ेशन, नागपूर.
मुद्रक : ताज ग्राफिक्स्, नागपूर
मो. ८०५५४८५०७१, ९९२३००४२४९

क्र.	विषय	पृष्ठ क्रमांक

१) इस्लाम का अर्थ १

२) अच्छा मुस्लिम कौन? १

३) अल्लाह के यहाँ सब से प्यारा कौन? २

४) इस्लाम में सबसे अच्छा इन्सान कौन? २

५) एक इन्सान का नाहक़ कत्ल पूरी इन्सानियत का कत्ल है.... ३

६) ना हक़ क़त्ल करने का इरादा भी बहुत बड़ा पाप है ४

७) दुश्मन की लाशों को कांट छांट करने से मना किया ४

८) किसी को तक़लीफ देने की भी अनुमति नही ५

९) लड़ाई की इच्छा भी मत करो ६

१०) हथियार प्रदर्शन पर रोक..... ६

११) आग मे जलाने से रोक दिया गया ६

१२) गैर मुस्लिम नागरिक के कत्ल का बदला कत्ल है।..... ७

१३) गैर मुस्लिमों के बच्चों का कत्ल हराम ९

१४) गैर मुस्लिमों के पेड़ काटना भी मना है ९

१५) दुश्मन से अच्छे व्यवहार की बेमिसाल शिक्षा..... १०

१६) बंधकों से अच्छे व्यवहार की बेमिसाल शिक्षा १०

१७) इस्लाम में युध्द के कुछ महत्वपूर्ण नियम १३

१८) क्या सब आतंकवादी मुसलमान है? १४

लेखक की ओर से...

मीडिया की महेरबानी से आज आतंकवाद को इस्लाम से जोड़ना एक फैशन बन चुका है। इस्लाम को सुख शांती का दुश्मन मार धाड़, खून खराबे की शिक्षा देने वाले धर्म के तौर पर पेश किया जा रहा है। इस्लाम की सच्चाई को छिपाने के लिये इतना ज्यादा प्रोपगंडा किया जा रहा है कि जानकारी ना रखने वाले भाई इसे बिना किसी जांच पड़ताल के सच समझ बैठते हैं।

लेकिन जब कोई व्यक्ति इस प्रोपगंडा की सच्चाई और अस्लीयत को मालुम करने की कोशिश करता है। इस्लाम का अध्ययन करता है तो यह देख कर उसकी आँखे ठंडी हो जाती है कि इस्लाम खून खराबे की नही बल्कि अमन व शांति की शिक्षा देता है। वह नफ़रत का नही, मोहब्बत का धर्म है। तबाही का नही, सलामती का धर्म है। यहाँ तक कि उसका दिल पुकार उठता है कि इन्सानियत (मानवता) और दुनिया की शांती सलामती के बारे में जो शिक्षा और कानून इस्लाम ने दिए है वे बेमिसाल है। तो आइए हम इस्लाम की बुनियाद कुरआन और हदीस (पैग़म्बर हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के कथन और कार्य) की कसौटी पर निम्नलिखित इल्ज़ामों की जाँच करें

१) क्या वास्तव में इस्लाम नफ़रत और हिंसा की शिक्षा देता है?
२) क्या वास्तव में इस्लाम निर्दोष, बेकसूर इन्सानों की हत्या करने का आदेश देता है?
३) क्या वास्तव में इस्लाम आतंकवादी धर्म है?

इस्लाम का अर्थ

सब से पहले तो आप यह जान लिजिये कि इस्लाम का अर्थ ही सलामती, सुख शांती है। इसी तरह ईमान का शब्द भी अमन, सुकून, शांती सुरक्षा को बताता है। तो इस्लाम का अर्थ अमन शांती और आतंक का मतलब दहशत, अत्याचार और ज़ाहिर सी बात है कि यह दोनो बिलकुल उलट वास्तविक्ता है। जो एक साथ इक्ठ्ठा नही हो सकती इसलिये कि जहाँ सलामती होगी वहाँ आतंक नही हो सकता और जहाँ आतंक पाया जायेगा वहाँ सलामती का सवाल ही नही उठता, तो जब इस्लाम और आतंकवाद दो अलग वास्तविक्ताएँ है तो अब यह नही कहना चाहिये कि इस्लाम आतंक फैलाने वाला धर्म है।

यह कहना तो ठीक ऐसा ही है जैसा कोई कहे कि, यह ठंडी बरफ तो दहकती आग की तरह गरम है। या यह सफेद उजला दुध कोयले की तरह काला है। तो जिस तरह गुलाब के कोमल फूल को अंगारा या अमृत को ज़हर कहना खुली गलती है इसी तरह इस्लाम को आतंकवादी धर्म कहना या समझना खुली गलती है।

कहने का अर्थ है कि इस्लाम एक संपुर्ण अमन व शांती का धर्म है। इस में फितना, फ़साद तबाही बरबादी कि कोई गुंजाईश ही नही।

अच्छा मुस्लिम कौन?

मुस्नद अहमद शरीफ में हदीस है कि प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने फरमाया "(अच्छा) मुसलमान तो वह है जिसकी ज़बान और हाथ से लोग सुरक्षित रहें।"नसई शरीफ में हदीस है कि प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने फ़रमाया " मोमिन तो वह है जिस से लोग अपनी जान और माल को सुरक्षित समझें।"

ऊपर लिखी दोंनो हदीसें यह स्पष्ट करती हैं कि एक अच्छा मुसलमान तो वही है जिस की जुबान और हाथ से हर आदमी की जान, माल व इज़्जत सुरक्षित हों। तो मालूम हुआ कि अगर कोई व्यक्ति इन्सानियत का

दुश्मन बन जाए मार धाड़ करे चाहे जितना इस्लाम का नाम लेता हो वह एक अच्छा मुसलमान हरगिज़ नही हो सकता।

कुरआन पाक खोलते ही सब से पहले जिस आयत पर नज़र पड़ती है वह है (बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम) जिसका हिंदी में अर्थ होगा अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा महेरबान (कृपालु) अत्यन्त रहम वाला है। इतने प्यारे सुंदर अंदाज़ में कुरआन की शुरूआत होती है। तो अब आप ही बताए जिस धर्म कि किताब कृपा और दया को बयान करते हुए शुरू हो रही हो क्या वह धर्म और वह किताब हिंसा, फसाद, आतंकवाद की शिक्षा दे सकती है?

आगे बढ़ते हैं। कुरआन की पहली सूरत की पहली आयत में बताया गया है की अल्लाह सारे जहानो का पालनहार है। और पालनहार का शब्द भी बेपनाह कृपा और दया को ज़ाहिर करता है। इसी तरह कुरआन ने यह भी बताया की अल्लाह सब दया करने वालों से बढ़ कर दया करने वाला है और माफ़ करने वालों को पसंद करता है। फिर कुरआन पाक ने सुरह अल अम्बिया आयत १०७ में बताया की पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम को सारे जहानों के लिए रहमत (कृपा) बना कर भेजा गया।

अल्लाह के यहाँ सब से प्यारा कौन?

मिशकात शरीफ में हदीस है प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम ने फ़रमाया "सारी मखलुक अल्लाह का कुन्बा है,अल्लाह के यहाँ सब से प्यारा वह है जो उसकी मखलुक से ज्यादा अच्छी तरह व्यवहार करता है।"

इस्लाम में सबसे अच्छा इन्सान कौन?

मुसलिम शरीफ की हदीस है "तुम में सब से अच्छा वह है जो लोगों को सब से ज्यादा फ़ाएदा पहुँचाने वाला है।" ज़ाहीर है खून खराबा किसी को फायदा पहुँचाना तो नही है। तो जो ऐसा कर रहे है वह अच्छे मुसलमान नही हो सकते।

एक इन्सान का नाहक़ कत्ल पूरी इन्सानियत का कत्ल है

जिस समाज में इन्सानी जान का कोई महत्व (अहमियत) नही। जहाँ लोग एक दुसरे के खून के प्यासे हों जहाँ हर छोटी बड़ी बात पर नाहक़ (निर्दोष) खून बहाया जाता हो उस समाज में शांती और सलामती हरगिज़ स्थापित नही हो सकती। इस कारण इस्लाम ने अमन शांती की स्थापना के लिये इन्सानी जान के सम्मान पर बेहद जोर दिया। इस्लाम की नज़र में किसी इन्सानी जान की अहमियत कितनी ज्यादा है? इसका अंदाजा तो सिर्फ इसी बात से लगाया जा सकता है, कि इस्लाम ने बिना वज़ह के एक इन्सान के क़त्ल को पूरी इन्सानियत का क़त्ल ठहराया है। कुरआन पाक की सुरह ५, आयत ३२ में है।

"जिसने किसी जान को कत्ल किया बिना किसी जान(खुन) के बदले या ज़मीन में किसी फसाद के बिना तो ऐसा है जैसा कि उसने सारे इन्सानों को कत्ल किया और जिस ने किसी एक जान को बर्बाद होने से बचा लिया तो ऐसा है जैसा कि उसने सारे इन्सानों के जीवन को बचा लिया"

तो जो बेरहम नाहक़ (निर्दोष) किसी का खून बहाता है। असल में वह अमन-शांती का दुश्मन होता है। उसका यह कार्य समाज में दंगे फसाद की आग भड़काता है। वातावरण में बेचैनी पैदा करता है। और उसको अपराध करते देख कर दुसरे भी उस कार्य के लिये दिलेर हो जाते है। जिसका असर पूरे समाज और ईन्सानियत पर पड़ता है। इसी लिये कुरआन पाक ने एक इन्सान के नाहक कत्ल को पुरी इन्सानियत का कत्ल बताया है।

ज़रा विचार तो करें कि जब इस्लाम किसी एक इन्सान की जान को भी नाहक़ कत्ल करने की अनुमती नही देता। तो फिर यह कैसे हो सकता है कि वह आत्मघाती हमलो, बम धमाकों या गोलीबारी के जरिये हज़ारो बेकसूर लोगों को मारने की अनुमती दे? तो जो लोग बम धमाकों और आत्मघाती हमलों के जरिये खून खराबा करते हैं, फसाद फैलाते हैं। वह असल में इस्लामी शिक्षा से हट चुके हैं। उनके कार्य का इस्लाम से कोई संबध नही।

ना हक़ क़त्ल करने का इरादा भी बहुत बड़ा पाप है

किसी इन्सान का ना हक़ खून बहाना तो बड़ी बात है। कोई ऐसा करने के बारे में सोचे इस्लाम उसकी भी अनुमती नही देता। बुखारी शरीफ में आया है कि "खुदा के नज़दीक तीन लोग सब से ज्यादा बुरे है। और उन में तीसरा वह व्यक्ति हैं जो किसी इन्सान का नाहक़ खून बहाने पर तुला हुआ हो।"

दुश्मन की लाशों को कांट छांट करने से मना किया

इन्सानी जान तो इन्सानी जान है। इन्सानी लाश की भी बेहुरमती से मना किया गया। पैग़म्बरे इस्लाम (सल्लल्लाहो अलैहे वस्लम) से पहले यह रिवाज था कि दुशमन की लाशों पर घोडे दौडाये जाते मगर जब इस कार्य से भी बदले की आग ठंडी ना होती तो लाश के कान नाक आदि काट देते, छाती चीर कर कलेजा निकाल कर उसे दांतो से चबाते। इस तरह लाश को कांट छांट करने को अरबी भाषा मे 'मुसला'कहा जाता है। नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने मुसलमानो को दुश्मन की लाशों को चीर फाड़ करने से मना कर दिया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन यज़ीद कहते हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने हमे'मुसला' करने से रोका। ऐसे ही हज़रत इमरान बिन हसीन कहते हैं की प्यारे नबी(सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने हमें 'मुसला' करने से रोकते थे।

खंदक की लड़ाई के समय एक नौफल नाम का दुश्मन गढ़ढे.मे गिर गया और मारा गया। मक्का वालों को डर महसुस हुआ कि कही मुसलमान उनके साथी की लाश को कांट छांट ना कर दें इसलिये उन्होने बिन्ती की, कि दस हज़ार दीनार (सोने के सिक्के) लेलो और हमारे साथी की लाश हमें लौटा दो। लोगों कुरबान जाईए प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे व स्ललम) पर कि आपने दस हज़ार दिनार(सोने के सिक्के) की पेशकश

के जवाब में कहा की, लाश उनको दे दो क़ीमत की जरूरत नही, हम लाशों की कीमत नही लिया करते।

याद रहे खंदक की इस लड़ाई से ठीक पहले वाली लड़ाई जो उहुद में हुई थी। उस में इन मक्का वालों ने मुसलमानो की लाशों को चीर फाड़ कर रख दिया था यहाँ तक कि खुद प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) के प्यारे चाचा हज़रत हमज़ा (रदि अल्लाहो अन्हु) के जिस्म को भी काटा गया नाक कान काट लिये गये फिर कलेजा निकाल कर उसे चबाया गया मगर इतना सब कुछ होने के बाद भी पैग़म्बरे इस्लाम (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने अपने दुशमन की लाश को कुछ ना किया और मुसलमानो को भी रोक दिया। यह है उस महान हस्ती का व्यवहार, जिसके बारे में दुषप्रचार किया जाता है कि उन्होने आतंकवाद की शिक्षा दी है। आखिर इन्साफ़ कहाँ चला गया?

किसी को तक़लीफ देने की भी अनुमती नही

कत्ल तो बड़ी चीज़ है इस्लाम तो इस बात की भी अनुमति नही देता कि कोई अपने पड़ोसी को कोई भी कष्ट पहुँचाए। चाहे वह गैर मुसलिम ही क्यों ना हों।

बुखारी शरीफ में आया की प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने फ़रमाया "क़सम खुदा की वह ईमान वाला नही, क़सम खुदा की वह ईमान वाला नही, कसम खुदा की वह ईमान वाला नही", पूछा गया ऐ अल्लाह के रसुल कौन ईमान वाला नही? आप ने फ़रमाया जिसका पड़ोसी उस के अत्याचार से सुरक्षित नही।

इस्लामी कानून की लगभग सब किताबों में यह स्पष्ट लिखा है कि पड़ोसी चाहे किसी भी धर्म का हो उसको कष्ट देना जायज़ नही। पड़ोसी को तक़लीफ पहुँचाना कितना बड़ा पाप और अपराध है। इसका अंदाज़ा इस से करें कि इस को तीन बार क़सम खा कर बयान फ़रमाया गया। दुसरी बात यह है कि इस हदीस में पुरी दुनिया की सलामती का नियम

दिया गया है। वह इस तरह कि एक घर के पास वाला घर, उसका पड़ोसी। एक बस्ती के पास वाली बस्ती, उसका पड़ोसी है। एक शहर के पास वाला शहर, उसका पड़ोसी। एक देश के पास वाला देश, उसका पड़ोसी। और एक महाद्वीप के पास वाला महाद्वीप, उसका पड़ोसी है, तो हर पड़ोसी जब अपने पड़ोसी को कोई दुख नही देगा ना ही कोई किसी पर ज़्यादती करेगा, कोई किसी के साथ खून खराबा नही करेगा तो हर तरफ अमन सुकून का माहोल होगा। हर जगह शांती सलामती और खुशियाँ होगी।

लड़ाई की इच्छा भी मत करो

प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने फ़रमाया, "दुश्मन से लड़ाई की इच्छा मत करना" (बुखारी शरीफ)

जिस धर्म ने दुश्मन से लड़ाई करने की इच्छा से भी मना किया हो उस के बारे मे कहना की वह मार-धाड़ की शिक्षा देता है। सरासर गलत बात है।

हथियार प्रदर्शन पर रोक

"हजरते जाबिर (रदि अल्लाहु अन्हु) कहते है कि प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने खुली तलवार लेने देने से मना फ़रमाया" खुली तलवार के लेन-देन से घायल होने का डर तो होता ही है। उसके अलावा शस्त्र प्रदर्शन से किसी के भड़क उठने का भी डर बना रहता है। यह है इस्लाम की शिक्षा। जब हथियार प्रर्दशन मना है तो फिर खुले तौर पर खुन खराबा कितना गलत होगा?

आग मे जलाने से रोक दिया गया

सुनन अबू दाऊद शरीफ में हदीस मौजुद है कि प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने चींटीयों का एक बिल देखा जिसे

जलाया गया था तो आपने फरमाया "आग में जलाने का दंड़ देना आग पैदा करने वाले के अलावा किसे के लिये सही नही।" इस्लाम ने जब चींटी जैसे प्राणी को भी जलाने से मना किया तो फिर इन्सानों को आग में जलाने की इज़ाजत कब दे सकता है? इसी वज़ह से प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) जब किसी को युध्द पर भेजते तो पहले ही ताकीद (सूचित) कर देते की किसी को आग मे जला कर मत मारना।

गैर मुस्लिम नागरिक (मुआ़हिद) के कत्ल का बदला कत्ल है।

१) मुस्नद इमाम शाफई में हदीस है की एक मुसलमान ने अहले किताब में से एक व्यक्ति को कत्ल कर दिया, वह मामला प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) के पास पहुँचा। तो आप ने फरमाया "मैं गैर मुस्लिम नागरिकों के अधिकार अदा करने का सब से ज्यादा जिम्मेदार हूँ।" फिर आपने बदले में उस मुसलमान को कत्ल करने का हुक्म दे दिया और उसे कत्ल कर दिया गया।

२)सुनन नसई में हदीस है कि प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने फरमाया "जो किसी गैर मुस्लिम नागरिक (मुआ़हिद) को नाहक़ निर्दोष कत्ल करेगा अल्लाह उस पर जन्नत हराम कर देगा।

३)बुखारी शरीफ में भी हदीस है कि "जिसने किसी गैर मुस्लिम (मुआ़हिद) को कत्ल किया तो वह जन्नत की खुश्बू भी नही सुंघ पायेगा।"

ऊपर लिखी हदीसों को फिर पढ़ लिजिये क्या अब भी कहा जायेगा की इस्लाम ने मुसलमानो को मार-धाड़ करने और गैरमुस्लिम (मुआ़हिद) लोगों को मारने के आदेश दिये हैं? इन्साफ से बताईए जब इस्लाम गैरमुस्लिम नागरिक (मुआ़हिद) को कत्ल करने वाले के लिये बदले में कत्ल की सज़ा (दंड) सुना रहा है। तो वह गैर मुस्लिम भाई-बहनो को कत्ल करने की शिक्षा कैसे देसकता है?

कुछ अधुरी जानकारी रखने वाले यह प्रश्न कर सकते हैं कि,जब हदीस में खुले तौर पर गैर मुस्लिमों के कत्ल से मना किया गया है और बदले में कातिल के लिये सजाए मौत रखी गई है, फिर कुरआन पाक़ में क्यों कहा गया की "काफिरों को जहाँ पाओ कत्ल करों" आखिर इसका मतलब क्या है? इन्साफ का तरीका यह है की किसी बात को समझने और सही परिणाम तक पहुँचने के लिये पहले उस बात के हालात को सामने रखा जाये की किन हालात में वह बात कही गई? कुरआन पाक़ की जिस आयत में यह कहा गया कि काफिरों को जंहा पाओ कत्ल करो यह हुक्म हर गैर मुस्लिम के लिये नही है बल्कि यह हुक्म उन ज़ालिम इन्सानो के लिये था जो मुसलमानो को कत्ल करने उनकी बस्तियाँ उजाड़ने के लिये बार बार उन पर आक्रमण (हमला) कर रहे थे। उन्हे दुनिया से मिटा देने के लिये बार-बार फ़साद कर रहे थे। वे मुसलमानों को जीवित देखना ही नही चाहते थे।

पैग़म्बरे इस्लाम ने मक्का में लोगों को एक ईशवर की पूजा करने का आदेश दिया, किसी पर जुल्म करने, हराम कमाई खाने, निर्दोष का कत्ल करने, लडकियों पर अत्याचार करने से मना किया। मगर कुछ काफिरों को यह पसंद नही आया उन्होने मुसलमानों पर अत्याचार के पहाड़ तोड़ने शुरू कर दिये। तरह तरह से उनको सताते, कुछ को तो दहकते अंगारो पर नंगी पीठ लिटा कर भारी पत्थर छाती पर रख देते, तपती रेत पर घसीटते, लोहे की सलाखें गरम करके उनके शरीरों को दागते, रास्ते चलते मुसलिमों को पत्थर मारते और तो और उनका सामाजिक बहिष्कार किया कि कोई भी इनके हाथों खाने पीने और ज़रूरत का कोई भी सामान ना बेचे। यहाँ तक कि मुसलमानों को पेड़ के पत्ते भी खाने पड़े। यह बहिष्कार दो चार महीने नही बल्कि पूरे तीन साल चलता रहा। मुसलमानो को उनके अत्याचार से बचने के लिये आखिर मक्क़ा को छोड़ना पड़ा। बहुत से मुसलमान अत्याचार से बचने के लिये अपने घर कारोबार दोस्त रिश्तेदार सब कुछ छोड़ कर मदीना चले गए। मगर उन अत्याचारी लोगों से मुसलमानो का चैन से जीना देखा ना गया और वह मदीने के यहुदी और

अरब के कबीलों को मुसलमानो से युध्द के लिये भड़काने में लग गए। फिर मदीने की छोटी सी बस्ती पर हमला (आक्रमण) शुरू कर दिया। अब आप ही बताईये के ऐसे अत्याचारी लोगों पर क्या फूल बरसाने का हुक्म दिया जाता? अमन शांती के लिए हज़ारो जान की सुरक्षा और बचाव के लिए यह जरूरी था।

आप इस बात को इसतरह भी समझ सकते हैं कि हमारे प्यारे देश में अगर कही खतरनाक फसाद हो जाए और दंगाई बेगुनाहों, निर्दोषों की जान लेते घूम रहें हों एसे में फसाद को कुचलने के लिये पुलिस को आदेश दिया जाता है की फसाद करने वालों को जहाँ भी देखो गोली मार दो और इस कार्य को कोई भी गलत नही मानता क्योंकि इसके बिना शांति की स्थापना नही की जा सकती।

गैर मुस्लिमों के बच्चों का कत्ल हराम

इस्लाम ने अपने मानने वालों को युध्द की इच्छा करने से भी मना किया लेकिन अगर कभी हालात के बिगड़ने पर युध्द करना पड़ भी जाए तो उसके नियम भी बताए है। और उन नियमों का पालन जरूरी है इस्लाम में ऐसा नही है कि जंग में सब जायज़ है।

१)सुनन अलकुबरा में हदीस है की प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) जब सेना को रवाना करते तो उन्हें कहते कि "किसी बच्चे का कत्ल ना करना, किसी औरत का कत्ल ना करना और किसी बुढ़े का कत्ल ना करना"

२)सुनन अबु दाऊद में भी हदीस है कि "ना किसी बूढ़े को कत्ल करना ना किसी दुध पीते बच्चे को ना किसी छोटे को और ना किसी औरत को।"

गैर मुस्लिमों के पेड़ काटना भी मना है

मुसनद अहमद में हदीस है की "जिस व्यक्ति ने किसी बच्चे या बुढे का खून बहाया या खजूर का बागीचा जलाया, या कोई फलदार पेड़ काटा या

उस इलाके के रहनेवालों की किसी बकरी को जिब़ाह किया (काटा) तो उसकी पकड़ होगी।"

इस्लाम का सलामती भरा पैग़ाम शांति भरा संदेश सिर्फ मुसलमानो के लिये नही बल्कि सब के लिये है। यह वह सलामती शांति वाला धर्म है जो इन्सान की हैसियत से सब की जान की सलामती चाहता है। और इन्सान तो इन्सान दुश्मन की बकरी को भी काटने की इज़ाज़त नही देता। और फिर उस धर्म से ज्यादा शांति की शिक्षा देने वाला कौन होगा जो दुश्मन के फलदार पेड़ो को जलाने, काटने को मना करता हो?

दुश्मन से अच्छे व्यवहार की बेमिसाल शिक्षा

कुरआन शरीफ की सुरह ९ आयत ६ में हैं कि, " अगर मुशरेकीन में से कोई आप से अमन (सुरक्षा) मांगे तो उसे अमन सुरक्षा दो" यहाँ तक की वह सुन ले अल्लाह का कलाम फिर उसे उस की सुरक्षा वाली जगह पर पहुँचा दो

देखिये कुरआन पाक सिर्फ यह नही कहता की अगर कोई मुशरिक युध्द के बीच तुमसे अमन सुरक्षा मांगे तो उसे बस सुरक्षा दे दो बल्कि यह भी आदेश दिया की उसे सुरक्षित जगह पर पहुँचा दो। हो सकता है आज के दौर में कोई रहम दिल फौजी जर्नल दुश्मन के फौजियों को अमन मागनें पर आज़ादी से जाने दे मगर बाताओ ऐसा कौन होगा? जो अपने फौजियों से कहेगा की अगर जंग के बीच दुश्मन फौजी अमन (सुरक्षा) मांगे तो उन्हे ना सिर्फ छोड दो बल्कि सुरक्षित जगह भी पहुँचा दो।

बंधकों से अच्छे व्यवहार की बेमिसाल शिक्षा

१) युध्द मे जो लड़ने वाले बंधी बनाए जाते हैं उनके बारे में कुरआन पाक ने सुरह ४७ आयत ४ में नियम बयान किया है कि "या तो ऐहसान (उपकार) करते हुए छोड़ दो या फिदया (जुरमाना) लेकर छोड़ दो"

२) फतेह मक्का के दिन प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने

मक्का शहर में प्रवेश करने से पहले फरमाया "किसी घायल व्यक्ति पर हमला ना किया जाए। किसी भागने वाले का पीछा ना किया जाए किसी बंधक को कत्ल ना किया जाए।" इस्लाम में बंधकों के साथ अच्छा व्यवहार करने की सख्ती से ताक़ीद की गई है।

३) बदर के युध्द में जो लोग कैदी बनाए गए उनमे एक अबू अज़ीज भी थे। वह कहते हैं की "मुझे एक अंसारी ने अपने घर में कैद कर रखा था। यह लोग मुझे तो खाना देते और खुद सिर्फ खजूरें खा कर गुज़ारा कर लेते। मुझे शर्म आती और मैं रोटी उनके हाथ में दे देता। मगर वह हाथ भी ना लगाते और मुझे रोटी वापस कर देते।" (सीरत इब्ने हिशाम)

जरा सोचिये कि उस जमाने में कैदियों को बुरी तरह कत्ल कर दिया जाता था लेकिन ऐसे समय में इस्लाम ने कैदियों के बारे में कितनी सुंदर शिक्षा दी और फिर मुसलमानो ने उस पर कैसे अमल किया।

४) बदर के युध्द के मौके पर जब शाम हुई तो कैदियों को रस्सियों से जकड़ दिया गया। रात में प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने कराहने की आवाज़ सुनी तो आप बेचैन हो गए। और सहाबा से पूछा कि क्या बात है? उन्होने बताया कि रस्सी के कड़क बंधन की वजह से कराह रहे हैं। आप ने तुरंत उन सबकी रस्सियों के बंधन ढ़ीले करने के लिए आदेश दिए।

५) मक्का के लोगो ने प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) को गालीयाँ दी आप के पाक शरीर पर कचरा और गंदगी फेकी आपके रास्ते में कांटे ड़ाले, आप पर पत्थर बरसाये, आप को जान से मारने की धमकियाँ दी और मुसलमानों की छोड़ी हुई जायदाद पर कब्ज़ा कर लिया आपके प्यारे चाचा हज़रत हमज़ा को शहीद किया और उनके कान, नाक काट ड़ाले। सीने को काट कर जिस्म को छलनी - छलनी कर दिया आपको शहीद करने और मुसलमानो को दुनिया से मिटाने के लिए मदीना की छोटी सी बस्ती पर १०००० लोगो की सेना लेकर हमला किया। खुलासा ये है कि हर तरह से सताया और तकलीफ

पहुँचाने मे उन्होंने कोई कसर ना छोड़ी मगर हम देखते है कि जब प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) उसी मक्का में विजेता के तौर पर प्रवेश किया और सारे जुल्मोंसितम करने वाले आपके सामने कैदी की हैसियत से खड़े थे और थरथर काँप रहे थे वह समझ रहे थे के आज हमारी बोटी बोटी करके चील कौओं को खिलादी जायेंगी प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने उनसे पूछा जानते हो मैं तुमसे क्या सुलुक करने वाला हूँ? उन्होंने कहा आप करम करने वाले हैं और करम करने वाले बाप के बेटे हैं तो प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने उन्हें माफ करते हुए कहा के जाओ "आज तुम सब आज़ाद हो और तुम पर कोई इल्ज़ाम नही।"

ज़रा सोचिये कि दुश्मन से बदला लेने का वह कितना किंमती मौका था १२००० सैनिक आपके साथ मौजुद थे आप जैसा चाहते वैसा बदला ले सकते थे। लेकिन आप ने ऐसा कुछ भी ना किया।और फिर माफ करने का अंदाज तो देखिये, आप ने उनसे फरमाया"आज तुम सब आज़ाद हो और तुम पर कोई इल्ज़ाम नही।"

माफ करने की जो मिसाल प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने कायम फरमाई इन्सानी इतिहास में इसकी कोई मिसाल नही मिलती किसी बादशाह, किसी राजनीतिक लीडर, किसी फौजी जनरल ने इस तरह के पाक किरदार का मुजाहरा कभी न किया वर्ना वह तो वह दौर था के जब कोई किसी शहर मुल्क को जीत लेता तो बच्चो को कत्ल करवाता, जवानो को कत्ल करवाता, औरतो और जवान लड़कीयो की इज्जतें सरे आम लूट ली जाती, बुढ़ो का खून बहाया जाता, खेतो बागीचो को तबाह कर दिया जाता, घरो और बस्तियों को आग लगा दी जाती लेकिन प्यारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने उस जालीमाना तरीके से बिल्कुल हट कर माफ करने और क्षमा कर देने की बेहतरीन मिसाल कायम फरमा दी।

इस्लाम में युध्द के कुछ महत्वपूर्ण नियम

दुनिया कहती है कि जंग में सब जायज़ है। लेकिन इस्लाम इस बात का विरोध करता है। इस्लाम जीवन व्यापन कि संपूर्ण व्यवस्था है तो वह जीवन में पेश आने वाले हर मसले का हल बताता है तो जंग के भी नियम बताता है। इस्लाम ने जरूरत और मजबूरी में जंग की अनुमती तो दी है मगर, युध्द में इंसानियत का नुकसान कम से कम हो इसके लिए बहुत से नियम दिए है। जिन में से कुछ पेश किये जा रहे हैं।

१) इस्लाम युध्द को सिर्फ दुश्मन मर्द वह भी सिर्फ लड़ने वालो तक सीमित रखता है।

२) उस में से भी जो लड़ाई से अलग होजाए और अमन (सुरक्षा) मांगे तो अब उस से लड़ना नाजायज़ और पाप है। बल्कि मुसलमानो पर लाजिम है कि वह उन को सुरक्षा दे। और सुरक्षित जगह पहुँचा दें।

३) अगर दुश्मन का कोई भी सैनिक घायल हो जाए तो उस पर भी आक्रमण जायज़ नही। इसलिए कि वह अब लड़ने वाला नही है तो उससे भी युध्द जायज़ नही।

४) जो सैनिक कैदी बनाए जाए उन पर अत्याचार करना भी जायज़ नही।

५) इसी तरह जो दुश्मन हथियार डाल दे उस पर भी आक्रमण नाजायज़ है।

६) दुश्मन की लाशों को चीर फाड़ करना जैसाकि पहले होता था इसकी भी इजाज़त नही।

७) भागने वाले घायल, अपंग, मजदूर, साधारण नागरिक, धर्मगुरू, औरत,बच्चें,बुढ़े,इलाज़ करने वाले, खाना बनाने वाले, कारोबारी आम जनता आदि इन सबको नुकसान पहुँचाने या तबाह बरबाद करने से अल्लाह के रसुल (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने स्पष्ट रूप से मना किया है और वह सब हदीसें हदीस की किताबों मे मौजूद है।

क्या सब आतंकवादी मुसलमान है?

पिछले दिनों एक चैनल पर एक गैर मुस्लिम बहन ने प्रोग्राम में आए एक राजनेता से यह प्रश्न पूछा की "हर आतंकवादी मुसलमान ही क्यों होता है?" इस प्रश्न के जवाब में उन्होंनें यह जवाब दिया

► गांधीजी को जिसने कत्ल किया क्या वह मुसलमान था?

► इंदिरागांधी को जिसने कत्ल किया क्या वह मुसलमान था?

► बाबरी मसजिद को जिसने शहीद किया वह मुसलमान था ?

► दिल्ली की सड़को पर सिखों की गरदने काटने वाले मुसलमान थे क्या?

► गुजरात के गली कुंचों में जिन लोगों को कत्ल किया गया और बेघर किया गया उसके जिम्मेदार मुसलमान थे क्या?

बुराई बुराई होती है। आप उसे मज़हब (धर्म) के ऐंगल से मत देखिए।

मैं इस जवाब मे थोडा विस्तार करना चाहता हूँ।

► जर्मनी मे हिटलर के आदेश पर नाजियों ने लग भग ६० लाख यहुदी लोगों को मार डाला ६० लाख यहुदीयों के खुन से हाथ रंगने वाले क्या मुसलमान थे?

► पहला विश्व युध्द जिसके कारण लगभग १ करोड़ ८० लाख लोग मारे गऐ। ९० लाख युध्द में और ९० लाख गरीबी,भुखमरी, बिमारी के कारण मारे गए। इस युध्द को किसने भड़काया था क्या मुसलमानो ने?

► दुसरा विश्व युध्द जिस कारण लगभग ५ करोड़ लोग मारे गंए इस मनहूस युध्द की शुरूआत किसने की ? क्या मुसलमानो ने?

► हिरोशिमा, नागासाकी पर ऐटम बम गिरा कर लगभग २ लाख लोगों को मौत की नींद सुलाने वाले क्या मुसलमान थे?

▶ अमेरिका के पुराने निवासी रेड इंडियंज़ थे उन करोड़ो रेड इंडियंज़ को मौत के घाट किसने उतारा? क्या उन्हे मारने वाले मुस्लिम थे?

▶ किसने ऑसट्रेलिया के २ करोड़ असली निवासियों को मौत के घाट उतारा? क्या मुसलमानो ने?

▶ सन १९१८ में सोवित युनियन ने कज़ाकिस्तान पर कब्ज़ा किया सब मस्जिद और मदरसों को खत्म कर दिया गया १० लाख के लगभग क़ाज़ान नागरिक मारे गए उनके कातिल क्या मुसलमान थे?

▶ सन १९४६ में योगोसलाविया में २४ हज़ार से ज्यादा लोगों का कत्ल किया गया कातिल क्या मुसलमान थे?

▶ सन १९७९ से १९८९ के बीच रूस ने अफ़गानिस्तान में १५ लाख अफगानियों को मार डाला १५ लाख इन्सानो की जान से खेलने वाले क्या मुसलमान थे?

▶ अप्रेल १९९२ से सितमबर १९९२ तक सिर्फ छह महीनो मे बोसनिया में ढ़ाई लाख इन्सानों को कत्ल किया गया और पचास हज़ार से ज्यादा इज्जत दार औरतों की इज्जत लूटी गई यह सब करने वाले क्या मुसलमान थे?

▶ कुछ अपराधियों को पकड़ने के लिए इराक पर रात दिन बमबारी करके और खतरनाक युध्द करवा कर लाखों इराकी नागरिकों को मौत की नींद सुलाने वाले क्या मुसलमान थे?

▶ युरोप में " IRISH REPUBLICAN ARMY" एक खतरनाक आतंकवादी ग्रुप है जो ईसाई है मुसलमान नही।

► अफ्रिका के युगांडा देश में "LORDS RESISTANCE ARMY" एक खतरनाक आतंकवादी ग्रुप है। जो इसाई है।

► श्रीलंका में "TAMIL TIGERS" एक ताकतवर आतंकवादी ग्रुप है। जिसने सबसे पहले आत्मघाती हमले शुरू किये यह भी मुसलमान नही है।

► फिलिस्तीन में इजराईली आतंकवादी सत्ता के जरिये लाखों फिलिस्तीनियों का खून बह चुका है। क्या इज़राईली आतंकवादी मुसलमान है ?

► १ सित्मबर २००४ को रूस के एक स्कूल में आतंकवादियों न ३८५ लोंगों को गोली मारी। जिन में १८६ बच्चे थे। और वह आतंकी भी मुसलमान नही थे।

► सन २०११-१२ में बर्मा में हजारों लोगो का कत्लेआम किया गया क्या उनके कातिल मुसलमान थे?

► नक्सलवादी जिन्होने १५ साल के भीतर छत्तीसगढ़ में कई सौ फैजियों को कत्ल किया वह भी मुसलमान नही है।

► देश में कई जगह खास तौर पर उड़ीसा मे इसाई पादरी, नन और बच्चों को जिंदा जलाने वाले क्या मुसलमान थे?

► हज़ारो साल से शूद्र कह कर लाखो इंसानो को मारने वाले उनके जीवन को जानवरों के जीवन से भी बदतर बनाने वाले क्या मुसलमान थे?

► पंजाब में खालिस्तान के नाम पर आतंक मचाने वाले भी मुसलमान नही थे।

► सन २००२ महु (मध्यप्रदेश) मे बम धमाका हुआ अपराधी मुसलमान नही थे।

► नान्देड़ २००६ में बम धमाके हुए। अपराधी मुसलमान नही थे।

► १९ फरवरी २००७ समझौता एक्सप्रेस में बम धमाका हुआ। ६६ लोग मारे गए। बम रखने वाले लोकेश शर्मा व धन सिंग थे जो मुसलमान नही है
► १८ मई २००७ मक्का मस्ज़िद हैद्राबाद बम धमाके में १३ लोग मारे गए। बम रखने वाला राजेन्द्र चौधरी और दुसरे लोग थे। वे भी मुसलमान नही।

► ८ सितमबर २००६ मालेगांव में बम धमाका हुआ ३२ लोग मारे गए बम रखने वाले लोकेश शर्मा और धन सिंग दोनो मुसलमान नही है।
► २९ सितमबर २००८ में फिर धमाका हुआ ५ लोग मारे गए अपराधी मुसलमान नही थे।

► २५ अगस्त २००७ को मक्का मस्जिद में धमाका हुआ। ३५ लोग मारे गए। बम रखने वाले मुसलमान नही थे।

► ११ अक्तुबर २००७ को अजमेर शरीफ दरगाह में बम ब्लास्ट हुआ २ लोग मारे गए। बम रखने वाला हरशद सोलंकी था जो मुसलमान नही है। (विस्तार से जानकारी के लिए आप पढ़ सकते है एस.एम.मुशरिफ़ साहब की किताब Who Killed Karkare? - और श्री सुभाष गताडे कि किताब "Godse's Childern")

► मुज़्फ़्फ़र नगर में खून खराबा करने और ५० के लगभग मुस्लिम औरतों का बलात्कार करने वाले भी मुसलमान नही है।

हर आतंकवादी मुस्लिम होता है कहने वालों की आँख खोलने के लिए इतना काफ़ी है। इसलिस्ट को फिर पढ़ले और आपको पता चल जायेगा कि किस किस ने आतंक मचाया? कौन -कौन आतंक फैला रहा है? किसने कितना खून बहाया?

"ध्यान रहे हम यह नही कह रहे कि इस्लाम का नाम लेने वालों ने आतंक नही मचाया। हम जानते है कि कुछ लोग जो इस्लाम के नाम लेवा हैं। जो आतंकवादी हैं। लेकिन मुसलमान कौम में ऐसे लोगों की संख्या आटे में नमक बराबर या उस से भी कम है। क्या आपने कभी सोचा? कि इस्लाम के नाम लेवा आतंकियों के हाथों आज तक जितने गैर मुस्लिम मारे गए उस से कई गुना ज़्यादा मुसलमान मारे गए है। उसके बावजूद मुसलमानों को बदनाम करना क्या इसी का नाम इन्सानियत है?

आखिर ऐसा क्यों होता है? कि इस्लाम का नाम लेवा अगर आतंकी कारवाई करे तो हम उसे आतंकवादी मानते है। लेकिन जब वही कार्य एक गैर मुस्लिम करता है तो उसे सिर्फ अपराधी कहा जाता है। अगर कोई मुसलमान नाम का व्यक्ति किसी निर्दोष की हत्या करे तो वह आतंकवादी होता है। लेकिन वही कार्य या उससे बड़े पैमाने पर भी अगर कोई गैर मुसलिम करे तो उसे आतंकवादी क्यों नही कहा जाता? आखिर इंसाफ के लिए दो तराज़ू क्यों इस्तेमाल की जा रही है? इन्साफ की कसौटी तो एक होती है। सच्चाई बयान करने में रूकावट किस बात की है ?

"हमें साफ कह देना चाहिए कि बुराई बुराई है। चाहे जो भी करें। मुम्बई के सीरियल बम धमाके हों या २६/११ का आतंकवादी हमला हो या गुजरात के दंगे, दिल्ली में सन १९८४ का दंगा हो या उड़ीसा में क्रिस्चन जाति पर हमला। यह सब करने वालें जो भी हों वह आतंवादी है। इसलिए की निर्दोष की हत्या करना आतंक है। और जो करे वह आतंकवादी है। इन्सानियत का दुश्मन है।"

आतंकवादी संगठन (तालेबान, आई.एस.आई.एस.,) आदी इस्लामी शिक्षा की कसौटी पर

इतिहास हमें बताता है कि, हर दौर में ऐसे लोग हुए है। जिन्होने इन्साफ के नाम पर अत्याचार किया। सच के नाम झूठ बोला और अपने नाज़ायज मक्सद को पाने के लिए सच्चाई को बदल कर दुनिया के सामने पेश किया। आज भी एसे लोग मौजूद है, इन्के अलग-अलग संगठन है। जिन्में से कुछ संगठन इस्लाम के नाम पर आतंक मचा रहे है। इन ज़ालिमों ने इस्लाम के नाम की जितनी बेदर्दी से इस्तेमाल किया उसकी मिसाल नही मिलती। जिस धर्म ने हर तरह के अत्याचार से रोका उसी के नाम पर हर तरह का अत्याचार किया गया। और अपनी गैरइस्लामी हरकतों पर इस्लाम का लेबल लगा कर दुनिया को गुमराह कर रहे है। जो भी इन्साफ पसंद आदमी इस्लामी शिक्षा की रोशनी में इनकी कारवाईयों का जायज़ा लेगा वह सीधा इस नतीजें पर पहुचेगा कि यह इस्लाम के नुमाईन्दें नही है ये तो सारी इन्सानियत के दुश्मन है। तो आईये हम इस्लामी शिक्षा की कसौटी पर इनकी कारवाई का कुछ हल्का सा जायजा लेते है।

▶ इन्सानी जान की अहमियत

आतंवादी संगठन :- इनके नज़दीक इन्सानी जान की कोई अहमियत नही सिर्फ पिछले कुछ सालों के अंदर इन्होने हजारों बेकसुरों को बेदर्दी से मार डाला।

इस्लामी शिक्षा :- इस्लाम की नज़र में किसी इन्सानी जान की अहमियत कितनी ज्यादा इसका अंदाजा सिर्फ इससे लगाया जा सकता है कि, कुरआन की सुरा ५ आयत ३२ में कहा गया " एक निर्दोष जान की हत्या, पुरी इंसानियत ी हत्या है। जिसने किसी एक जान को बचाया, उसने पूरी इन्सानियत का जीवन बचाया।" जिस

धर्म ने इन्सानियत को ऐसी बेमिसाल शिक्षा दी अफसोस आतंकी उसी के नाम पर बेहिसाब खून बहा रहे है।

▶ आत्मघाती हमला

आतंवादी संगठनः- आतंकी लोगों का ब्रेन वॉश करके उनसे आत्माघाती हमले करवाते है। और उस के लिये एसी जगह चुनते है, जहॉ ज्यादा से ज्यादा भीड़ हो, जैसे ऑफिस, रेल्वे स्टेशन, मस्जिदें ताकी ज्यादा से ज्यादा लोग मारे जाए।

इस्लामी शिक्षा :- इस्लाम में आत्महत्या करना नाज़ायज हराम (बहुत बड़ा पाप है।) पैगम्बरे इस्लाम (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने फरमाया "जो जिस वस्तु से आत्महत्या करेगा, जहन्नम में उसको उसी वस्तु से अज़ाब (सजा) दि जाऐगी। जब आत्महत्या करने पर जहन्नम की सजा बताई गई है तो, आत्मघाती हमले जिस में सेकडों बेकसूर तड़प-तड़प कर मारे जाते है यह कितना बड़ा पाप होगा। और यह करने वाला कितना बड़ा मुजरिम होगा ?

▶ औरतों और बच्चों की हत्या

आतंवादी संगठनः- आतंकियों के दिल मोहब्बत, रहम से खाली है इनकी कुरुर्ता का यह आलम है कि यह औरतों और बच्चों को कत्ल करने से भी नही शर्माते। पाकिस्तान और इराक में जो हुआ वह इसकी ताज़ा मिसाल है।

इस्लामी शिक्षा :- साधारण हालात तो छोडिए इस्लाम जंग की हालत में भी औरतों, बच्चों और बुढ़ों के कत्ल से रोकता है। पैगम्बरे इस्लाम (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) जब किसी फौज को रवाना करते तो उनसे कहते "किसी बच्चें औरत और बुढ़े को कत्ल ना करना।

▶ गैरमुस्लिम नागरिको की सुरक्षा

आतंकवादी संगठन :- आतंकी इस्लाम का नाम लेते है। और इस्लामी हुकूमत का दावा करते है, लेकिन इस्लाम ने गैरमुस्लिम नागरिकों के जो पूर्ण अधिकार बताए है। उन्हे बिलकुल अदा नही करते। उलटा इनकी जान-माल को नुकसान पहुचाते है। इराक में एजदी क़ौम पर किया गया अत्याचार सब के सामने है।

इस्लामी शिक्षा :- इस्लामी कानून के मुताबिक मुस्लिम हुकूमत के गैरमुस्लिम नागरिकों (ज़िम्मी, आदि) को पूरे इन्सानी अधिकार प्राप्त होते है। खास इस विषय पर उलमा ने सेकडों किताबों में हज़ारो पेज लिखे है, यहा सिर्फ दो तीन सुन लें।

१) दुर्रे मुखत्मार में है "गैरमुस्लिम नागरिकों (मुआ़हिद आदि) को तक़लीफ से सुरक्षित रखना वाजिब (जरुरी) है।

२) रद्दुल मोहतार में है, "मुआ़हिद के अक़द की वजह से गैरमुस्लिम नागरिक(मुआ़हिद) के वही अधिकार है जो हमारे(मुस्लिमों) के है। फिर आगे लिखते है, ओलमा ने कहा है कि, गैरमुस्लिम नागरिक (मुआ़हिद) पर अत्याचार करना मुस्लामान पर अत्याचार करने से बड़ा गुनाह है। खुद पैगम्बरे इस्लाम (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) ने फरमाया "जो किसी गैरमुस्लिम नागरिक (मुआ़हिद) को (नाहक) कत्ल करेगा, अल्लाह उस पर जन्नत हराम कर देगा।"

इस जाएजे से साफ पता चलता है कि आतंकी डबल पॉलिसी अपनाए बैठे है। वह एक तरफ इस्लाम का नाम लेते है और दुसरी तरफ जी भरके इस्लामी शिक्षा का उलघंन करते है, वास्तव में इस्लाम से इनका रिश्ता किस तरह का है इसका पता तो एसे भी चल जाता है कि खुद को मुजाहिद समझने वाले यह आतंकी मस्जिदों, दरगाहों पर बम-बलास्ट करते है, जैसा कि इराक़, सीरया, पाकिस्तान मे हो रहा है। एसे नाजुक हालात में हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम इस्लाम की

सही तस्वीर लोगों के सामने पेश करे ताकि लोग गुमराह होने और गलत फहमी का शिकार होने से बचें। क्योंकि गलत फहमी नफरत, जुल्म और आतंकवाद को जन्म देती है।

एक जानवर जिसे लोग बडे चाव से पालते है उसका मामला यह है कि वह अपने खिलाने पिलाने वाले को खुब पहचानता है। उसका कहा मनता है, उसका मालिक सुबह शाम बस दो सुखी रोटियॉ डाल देता है। और सिर्फ इतने ही पर उस जानवार के आज्ञापालन का यह आलम है कि जब उसका मालिक उसे बुलाए तो दोड़ा चला आता है। सोचें यह उसका हाल है जिसे अक्ल (बुद्धि) से दूर का भी वास्ता नही। तो फिर इन्सान जो हर पल अपने रब की करोड़ो नेमतों में जीता है। जो अक्ल समझ भी रखता है उसे अपने सच्चे मालिक की किसकदर आज्ञा पालन करना चाहिए

यह सच्चाई है, कि इन्सान अपनी मर्जी से पैदा नही हुआ बल्कि उसे एक निराकार मालिक ने बनाया है। जिसका कोई साझी नही, जिसका ना कोई बाप ना बेटा, जिसे किसी की कोई जरुरत नही। सब उसी के जरुरतमंद है। उसी ने पूरी काएनात (ब्रहमांड) को पैदा किया। उसी ने माँ के पेट में जीवन दिया। उसी ने माँ-बाप के दिल में औलाद के लिए प्रेम डाला, उसी ने आखँ,कान,दिल,दिमाग,जुबान,आवाज,हवा, पानी, धूप, मौसम, फल, सबजी, अनाज आदि जिवन की हर जरुरत को पैदा किया उसी ने इन्सान को अकल (बुद्धि) जैसी नेमत दी। जिस से इन्सान तरह-तरह की वस्तु का अविष्कार करता है और फायदा उठाता है। सही और गलत में अंतर करता है, मगर अकल हर जगह इन्सान को गाईड नही कर सकती तो उसने इन्सानों में पैगम्बरों को भेजा। उन में सबसे आखरी पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वस्ल्लम) है। जिन्होने दोनो जहान में भलाई और कामयाबी के बेमिलास रहनुमा नियम (उसूल) बताये। खुलासा यह कि इन्सान

अल्लाह के दिए गये अनगिनत अहेसानात में जीता है।

जिस मालिक ने अनगिनत अहसान किए है, उसका हक़ है की इन्सान सिर्फ और सिर्फ उसी एक की बंदगी करे उसके दिए गए आदेशों के मुताबिक काम करें। उसके मना किए गए कामों से बचें, इसी मे भलाई और कामीयाबी है।और अगर उसकी आज्ञा का पालन नही किया तो वह नाराज़ होगा। और नाफरमान बंदों के लिए आखिरत (परलोक) में जहन्नम (नरक) की सजा तैयार है। जब दुनिया की आग सहन नही होती तो नरक की आग में जलना कैसे सहन होगा, इसलिये भलाई इसी में है कि कोई भी काम हरगिज ऐसा ना करें जिससे हमारा पालनहार नाराज़ हो।

इन्सान को चाहिए कि वह अल्लाह की बारगाह में अपने गुनाहों पर सच्चे दिल से माफ़ी मागें (तौबा करें) आईदा गुनाह ना करने का पक्का इरादा करें। और तौबा करने में देर ना करे। इसलिए कि मौत का भरोसा नही कब आजाए, पता नही सासों की माला कब टूट जाए। कितने ही लोगों को मौत ने अगली सांस लेने का मौका नही दिया।

अल्लाह सच्चाई पर चलने की तौफिक दे

आमीन...!

मोहब्बतों के फूल- नफ़रतों के काटे नही

प्रिय भाई-बहनो अगर आप सच्चे दिल से इन्सानियत की सेवा करना चाहते है तो दिलों में मोहब्बतों के फूल उगाए। नफ़रतों के काटे बिखेरने से बचें। नफ़रत समाज में दरार पैदा करती है। जब्कि मोहब्बत सबको जोड़कर रखती है। हमारे प्यारे देश हिन्दुस्तान बल्कि पुरी दुनिया को इसीकी जरूरत है....

-: For Your Feedback :-

8055485071, 9923004249, 9371111800

E-mail : gionagpur@gmail.com

* प्यारे नबी ﷺ का माफ (क्षमा) करना।
* प्यारे नबी ﷺ के औरतों पर एहसान।
* प्यारे नबी ﷺ की रहमत यतीमों पर।
* प्यारे नबी ﷺ और पड़ोसीयों के अधिकार।
* प्यारे नबी ﷺ और माँ-बाप की सेवा।
* प्यारे नबी ﷺ की रहमत बुढ़ो पर।
* प्यारे नबी ﷺ और सामाजिक बराबरी।
* प्यारे नबी ﷺ की रहमत जानवरों एवं पक्षियो पर।
* प्यारे नबी ﷺ की रहमत मज़दूरों पर।
* प्यारे नबी ﷺ और पेड़ लगाना (वृक्ष) रोपण
* प्यारे नबी ﷺ और पानी की सुरक्षा।

ISLAM
The Religion of
Peace

अच्छा मुस्लिम कौन ?

पैगम्बरे इस्लाम (सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम) ने फरमाया कि,
" (अच्छा) मुस्लिम तो वह है जिसकी जबान और
हाथ से लोग सुरक्षित रहें।"

(मुस्नद अहमद शरीफ)

ग्लोबल इस्लामिक ऑर्गनाईज़ेशन
नागपूर
Cell : 9371111800, 9881359922, 9373617209